Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

Late Ramesh Warpudkar ACS College
Sonpeth
Pin-431516
Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) Nov. 2020 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Index

1. Digital Banking :An Overview
Dr Madhukar P Aghav — 5
2. Financial Markets : Evaluating Averages and Indicators
Dr Sachin Nagnath Hadoltikar
Memon Sohel Mohd Yusuf — 13
3. Human Resource Management (Hrm) :An Overview
Dr. Kathar Ganesh. N. — 19
4. Impact of Mergers & Acquisition on Private Sector Banks In Global Economy
Dr. Nanaji Krishna Aher — 26
5. Dramatic Stress: The Spirit of Play
Sheema Farheen
Dr Farhat Durrani — 32
6. Recent Trend InBanking
Swapnil .Kalyan. Laghane, Dr Quazi Baseer Ahmed — 41
7. Corporate Governance in Maharashtra Companies
Dr. Rajesh Bhausaheb Lahane — 49
8. Effective Digital Marketing Strategies & Approaches
Dr Vikrant Uttamrao Panchal — 59
9. Global Competitiveness of Indian Industries Strategy and Innovation
Dr. Rajendra Ashokrao Udhan — 70
10. Policy Holders Perception On Claims Management With Reference To National Insurance Company
Yamsani Sathyanarayana, Dr. Balaji Dhondiba Kompalwar — 79
11. Demonetization: Before And After Menkudle D.V
Dr. Shahuraj S. Mule — 87
12. हिंदी साहित्य में आधुनिकता
प्रा. डॉ. बबन रंभाजीराव बोडके — 91
13. जल संवर्धन एवं सामाजिक गतिविधियां: विशेष संदर्भ मराठवाड़ा विभाग
प्रा. डॉ. जाधव ए. के. — 94
14. हस्त भरत कला–मार्गदर्शन आणि उपयोगिता हस्त–भरतकलेचा इतिहास:
डॉ. एम.एन साखळकर — 98
15. स्वामी विवेकानंदाच्या राजकीय विचारांची चिकित्सा
प्रा. यशवंत वळवी, — 102
16. माहिती तंत्रज्ञानाचा लोकप्रशासनावरील प्रभाव
प्रा. डॉ. व्ही. पी. सांडूर — 105
17. अध्यापन पध्दती व व्यावसायिक विकास घडवून आणणाऱ्या सुधारणा
डॉ. सतीश नारायण लोमटे — 108

Late Ramesh Warpudkar ACS College
Sonpeth
Pin-431516
Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Issue XI , Vol. III (Indexed) Nov. 2020 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

जल संवर्धन एवं सामाजिक गतिविधियां: विशेष संदर्भ मराठवाड़ा विभाग

प्रा डॉ जाधव ए. के.
कै रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनापेठ जी परभणी

परियोजना का परिचय

मराठवाड़ा विभाग महाराष्ट्र के एक विभाग में से ही हैं। महाराष्ट्र का विभाजन कोंकण, विदर्भ, खानदेश, पश्चिम महाराष्ट्र में किया गया है। इसी विभागों में से मराठवाड़ा एक विभाग हैं। जो भारत की स्वतंत्रता के बाद भी १७ सितम्बर १९४८ तक हैदराबाद संस्थान के आधिपत्य में था। भारत को विश्व में कृषि प्रधान राष्ट्र के नाम से जाना जाता है। मराठवाड़ा क्षेत्र भी कृषि प्रधान हैं। यहां बड़े पैमाने पर कृषि ओर कृषि आधारित व्यवसाय किए जाते हैं। मराठवाड़ा क्षेत्र में आज ८ जिले आते हैं। जिसका भौगोलिक स्थान अलग अलग गुणों से युक्त हैं। मराठवाड़ा क्षेत्र समुद्री तल से लगभग २०७० फुट ऊंचाई पर होने के कारण यहां कम बारिश होती है।

जल से ही मनुष्य का जन्म हुआ है, जल बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। बढ़ती आबादी और जल की कमी ऐसा चित्र मराठवाड़ा क्षेत्र में दिखाई देता है।

जल का स्थान सजिवों के जीवन में प्राणवायु के समान हैं। दुनिया की सभी प्राचीन सम्यताएं नदी दृ तालाबों के किनारे ही विकसित हुई है। जैसे मिस्र की सभ्यता जिसे सबसे पुरानी मानव सभ्यता मानी जाती है। भारत में सिंधु सभ्यता को अति प्राचीन सभ्यता माना जाता है। जल का महत्व कोई नकार नहीं सकता।

मराठवाड़ा क्षेत्र में वर्षा के कमी के कारण पिछले २० सालों में अनेक लोगों ने अन्य ठिकानों पर स्थानांतर किया। कई उद्योग – व्यवसाय बंद स्थिति हैं। कृषि के लिए जल नहीं, मानवी बस्ती में पीने के लिए जल नहीं। मराठवाड़ा क्षेत्र में ७० के दशक के बाद जल संवर्धन कार्य गतिमान हुआ। नदियों संवर्धन किया जाने लगा। छोटे बड़े तालाबों का निर्माण किया गया। आज छोटे – बड़े १८ तालाब हैं। बढ़ती आबादी को आज के स्थिति में जल मुहैया नहीं हो पाता है। क्यों की पिछले २० सालों में २००४, २०११ ओर २०१४ से लेकर आज तक लगातार सूखे या अकाल का सामना करना पड़ा है।इसी वजह से १६ जून २०१६ से ३० जून २०१६ में ३६ किसानों ने आत्महत्याएं की। जनवरी २०१६ से ३० जून २०१६ के अंतराल में ४३४ किसानों ने आत्महत्याएं कर ली।

कुएं से पानी निकाल ने की वजह से पैर फिसलकर अनेक मौतें हुई, पानी की वजह से अनेक बच्चों ने स्कूल छोड़ दिए। जल संवर्धन के लिए समाज की ओर से को प्रयास किए जाते हैं ओ अवैज्ञानिक हैं। राज्य, सामाजिक संस्थाएं ओर प्रशासनिक कार्यालयों की भूमिका क्या होनी चाहिए यह जानना आवश्यक है। जल संवर्धन के लिए आजतक जो नीतियां अपनाई ओर भविष्य में क्या नीतियां अपनाई जाएगी यह देखना आवश्यक लगता है।

साहित्य की समीक्षा

जल संवर्धन एवं सामाजिक गतिविधियां: विशेष संदर्भ मराठवाड़ा विभाग इस शोध अध्ययन कार्य के लिये विभिन्न ग्रंथ, सरकारी चार्ट, रिपोर्ट, संदर्भ ग्रंथ, ई बुक्स साहित्य का उपयोग किया गया है। जल संवर्धन से सामाजिक कृतियां जुड़ी हुई है। जल समाज के लिए एक समस्या बन गया है। जल उसके संवर्धन से समस्याओं शोध लेना जरूरी है। उसके इतिहास जान लेना ओर जल का वर्तमान और

Late Ramesh Warpudkar ACS College
Sonpeth
Pin-431516
Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

Issue XI , Vol. III (Indexed) Nov. 2020 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

भविष्य में क्या असर होने वाले हैं, इसका विभिन्न साहित्य के आधार पर अध्ययन करना आवश्यक होता है। कुछ अध्ययन अनुभव पर भी किया जाता है।

Eleventh five year plan - social sector

वाघेला अनिल इस दृ इन्होंने अपनी किताब स्वच्छता का समाजशास्त्र में जल का महत्व इंगित किया है। जल संवर्धन इस लिए महत्वपूर्ण है कि जल का उपयोग व्यक्तिगत, घरेलू, व्यावसायिक, कृषि और मानव – पशु पक्षियों से जुड़े हर कारणों से किया जाता है। व्यक्ति को हर दिन २०० लि की आवश्यकता होती है।

डॉ पंत डी सी दृ यह अपनी बुक्स भारत में ग्रामीण विकास के प्रकरण ८ के ग्रामीण विकास की समस्याएं में कहते हैं कि, ग्रामीण इलाकों के विकास में जल आपूर्ति एक समस्या बनी है। ग्रामीण इलाकों से सरकार द्वारा अनेक प्रकार की योजनाएं बनाई गई लेकिन आज भी जल आपूर्ति की समस्या हैं।

डॉ गावड़े इस एम (पी एच डी थीसिस) – Jalswarajya prakalp in Kolhapur district-sociological study के शिफारिशों में कहा गया है कि, ग्रामीण क्षेत्रों में पीने लायक पानी की समस्या दूर करने हेतु केवल सरकारी संस्थाओं या योजनाओं पर निर्भर नहीं रह सकते। जल संवर्धन के लिए सामाजिक संस्थाएं, संघठन एवं व्यक्ति को आगे आना चाहिए। जल साक्षरता, पुनभरण जल का गैर उपयोग, भूजल निकासी पर रोक ऐसे विषयों पर परिसंवाद आयोजित किए जाने की आवश्यकता है।

डॉ घारे मुकुंद दृ कहते हैं कि, मनुष्य और पानी में असंतुलन निर्माण हो गया है। मनुष्य हर दिन जल की मांग को बढ़ा रहा है, उपलब्ध जल मानव की जरूरतें पूरी नहीं कर सकता। बढ़ती आबादी और जल स्त्रोतों की कमी ऐसी स्थिति निर्माण हुई है। जल बचा के रखना जरूरी है।

सुनीता नारायण – बढ़ती जनसंख्या, उद्योग, कृषि उत्पादन की आकांक्षा के परिणाम स्वरूप जल की मांगे बढ़ रही है। लेकिन प्राकृतिक जल नहीं बढ़ रहा। जलवायु में हो रहे परिवर्तनों से भविष्य में जल ओर कम होने का डर हैं। इसलिए जल संवर्धन पर कोई कारगर नीतियां अपनाने की आवश्यकता है।

प्रा डॉ जोशी अंजली दृ जल मानव जीवन का आधार है। देश एवं राज्यों की आर्थिक, सामाजिक उन्नति जल सिचाई पर निर्भर है। स्थाई विकास के लिए जल संवर्धन अमूल्य हैं। वर्षा से प्राप्त जल की सिंचाई करना, जरूरतों पर ही जल का उपयोग करें। महाराष्ट्र में १/३ जमीन पहाड़ी, १/३ अवर्षण प्रवन ओर केवल १/३ अति वर्षा क्षेत्र हैं।

शोध समस्या का वर्णन

जल संवर्धन एवं सामाजिक गतिविधियां: विशेष संदर्भ मराठवाड़ा विभाग इस विषय पर की शोध कार्य में निम्न प्रकार की समस्याएं निर्धारित की जाती है।

- पिछले २० सालों में मराठवाड़ा क्षेत्र में जल का प्रमाण कम हो गया है। नदियां, तालाब, कुएं, बोरवेल जैसे संसाधनों में सामान्य जल नहीं पाया जाता।
- जल पर ही मानव, पशु एवं पक्षी, उद्योग, कृषि की उन्नति टिकी हुई है। मानव की आर्थिक, सामाजिक स्थिति दर्शाती है कि कृषि एवं अन्य सभी प्रकार के उद्योग जल के बिना व्यक्ति खेती एवं इससे जुड़े कोई भी उद्योग कर नहीं सकता।

Late Ramesh ... ACS College
Sonpeth
Pin-431516
Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

Issue XI , Vol. III (Indexed) Nov. 2020 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

- जल संवर्धन के लिए आज तक सरकार की ओर से जो नीतियां बनाई उसके बावजूद मराठवाड़ा क्षेत्र में पानी की कमी है। सरकार की नीतियां, योजनाएं सफल क्यों नहीं हुई यह देखना आवश्यक है।
- जल संवर्धन का विकास जिस तरह होना चाहिए था ओ हो नहीं सका। इसे सरकार, पंचायत राज, नागरिक या अन्य कौन सा घटक जिम्मेदार हैं। नदियों की रेत की तस्करी, जल संवर्धन से अनजान, पेड़ कटाई ऐसी अन्य समस्याओं की खोज करना जरूरी है।
- ७०þ किसान सिंचाई जल पर ओर ३०þ किसान प्राकृतिक जल पर खेती करते हैं। किसान आत्महत्याएं ज्यादा हो रही हैं। आत्महत्याओं कारण जल की कमी या अन्य क्या कारण हो सकता है ये बड़ी समस्या है।

Hypothesis of the research project

- प्राचीन जल संवर्धन नैसर्गिक था।
- जल वायु या बारिश का प्रमाण कम हो गया है।
- जल की कमी मानव निर्मित हैं।
- सूखे या अकाल दिन ब दिन बढ़ रहे हैं और किसानों कि आत्महत्याएं बढ़ गई है।
- जल संवर्धन की कमी के कारण कृषि, कृषि से जुड़े व्यवसाय और अन्य बड़े उद्योग बंद पड़े है।
- मराठवाड़ा क्षेत्र के अनेक नागरिक अन्य ठिकानों पर स्थानांतरित हुए हैं।

Objects of the project

- जल संवर्धन का व्यवस्थापन जान लेना।
- जल संवर्धन में सरकार एवं समाज की भूमिका ओर प्रयासों को स्पष्ट करना।
- जल संवर्धन का कृषि, कृषि सहायक और अन्य उद्योगों पर क्या परिणाम हुए यह स्पष्ट करना।
- किसानों की आत्महत्याएं किन कारणों से हुई इसका अध्ययन करना।
- जल संवर्धन को बढ़ावा देना ओर उसके तरीके ओर नीतियों का अध्ययन करना।

Research methodology

जल संवर्धन और सामाजिक गतिविधियां: विशेष संदर्भ मराठवाड़ा विभाग इस शोध कार्य का तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली, सर्वेक्षण, व्यष्टी अध्ययन पद्धतियों का इस्तेमाल किया जाएगा। तथ्यों का टेबल के आधार पर विश्लेषण किया जायगा। संशोधन संख्यात्मक ओर गुणात्मक संशोधन पद्धति पर निर्भर है।

National and international implications of project

आज की स्थिति में जल का महत्व सोने से भी ज्यादा है। भारत का कोई भी क्षेत्र अगर विकास नहीं कर पाता तो पूरे देश की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो सकती। जीडीपी नीचे चला जाता है। कृषि प्रधान हैं इसलिए सभी किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार होना जरूरी है। नहीं तो देश की अर्थ व्यवस्था पर विपरीत परिणाम होते है। किसान आंदोलन चलाते हैं, उससे सुव्यावस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। देश या देश का कोई भी क्षेत्र विकास नहीं कर पाता तो ओ देश वैश्विक अर्थव्यवस्था से बाहर हो जाता हैं और अन्य राष्ट्रों की करेंसी नहीं मिलेगी। इसका जल संवर्धन से नजदीकी संबंध हैं। जल पर कृषि और अन्य उद्योगों का स्तर कैसा हैं ये दर्शाता है। उसी पर उस क्षेत्र के नागरिकों की आर्थिक

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Issue XI , Vol. III (Indexed) Nov. 2020 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Late Ramesh Warpudkar ACS College Sonpeth Pin-431516 Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

, सामाजिक स्थिति क्या होगी इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। देश के किसी भी क्षेत्र में जल की कमी हो तो वहां के लोग अपने देश के किसी भी ठिकानों पर या अन्य देशों में स्थानांतरण करते हैं।

जल संवर्धन वैश्विक समस्या है, प्राकृतिक जलवायू स्थिति को धोका पहुंचाने में मानव जिम्मेदार है। अपने आर्थिक, भौतिक सुविधाओं के लिए मानवों ने पर्यावरण पर समय समय पर अपना हक जताया है। इसका परिणाम पर्यावरण की हानी हो गई। शोध लेना कभी रुकता नहीं, उपरोक्त शोध विषय के कई उप विषय निर्माण होते है। जल स्थिति में समय समय पर परिवर्तन होते है, मेरा यह कहना है कि मेरे इस संशोधन विषय पर भविष्य में अनेक संशोधन हो सकते हैं।

सन्दर्भ सूचि

1 Report of Divisional commissioner office, Aurangabad (M S)
२ अनिल वाघेला, २०१५ स्वच्छता का समाजशास्त्र, कल्पाज पब्लिकेशंस, दिल्ली
३ पंत डी सी, २०११ भारत में ग्रामीण विकास (Rural Development in India)कॉलिज बुक डेपो, जयपूर
४ प्रा गावडे एस एम, फेब.२०११ (Jalswarajya prakalp in Kolhapur district-Sociological study) तिलक महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, पुणे
५ डॉ घारे मुकुंद, २००० पानी, अन्न आणि लोकसंख्या, प्रफुल्ल प्रकाशन, पुणे
६ सुनिता नारायण, २०१२ पर्यावरण की राजनीति, सेंटर फॉर साइंस ऐंड एंपावरमेंट, नई दिल्ली
७ डॉ जोशी अंजली, जुलाई २०१० जल संसाधन संवर्धनासाठी सक्रिय सहभागाची गरज, योजना द्दृ मासिक
८ उमर फारुकी, नवंबर २०११ मृदा संरक्षण समय की मांग, कुरुक्षेत्र द्दृ मासिक, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
९ आगलावे प्रदीप, जनवरी २००० संशोधन पद्धतिशास्त्र व तंत्र, विद्या प्रकाशन, नागपुर

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbha